क्यों जरूरी है
महिला आंदोलन
महिला आंन्दोलन
एक हमारा नारा
भारत डोगरा

ISBN : 81-88720-65-8

उत्तम प्रकाशन

1/5971, कबूल नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032

द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 2009

मूल्य : 32.00

जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-110032

द्वारा मुद्रित

क्यों जरूरी है महिला आंदोलन

मानव समाज की सबसे पुरानी और सबसे व्यापक गलतियों में से एक मुख्य गलती यह रही है कि महिलाओं व लड़कियों से समानता व न्याय का व्यवहार नहीं हुआ है। आधी दुनिया तो महिलाओं से ही बनी है। अतः यदि महिलाओं को न्याय नहीं मिलता है तो आधी दुनिया अन्याय से पीड़ित है। इतना ही नहीं माँ, बेटी, बहन, पत्नी व अन्य नजदीकी स्तरों पर पुरुषों के महिलाओं से संबंध हैं अतः यदि महिलाओं का कोई गहरा दुख है तो पुरुषों पर भी असर पड़ता ही है। सच बात तो यह है कि पुरुषों की अपनी भलाई के लिए भी महिलाओं की भलाई जरूरी हैं।

हो सकता है कि समाज में महिलाओं को न्याय न मिलने की स्थिति का लाभ उठाकर कोई पुरुष किसी महिला के साथ अन्याय करे, पर यदि कल कोई अन्य व्यक्ति इस स्थिति का लाभ उठाकर उसी पुरुष की बहन या बेटी से अन्याय करे तो उस पुरुष को दुख होगा कि नहीं? दहेज-प्रथा को महिलाओं से एक अन्याय माना जाता है, यह सही है, पर इसका बोझ बूढ़े पिता व जवान भाई को भी उठाना पड़ता है कि नहीं? यदि किसी समाज में महिलाओं के प्रति अन्याय बढ़ेंगे तो उस समाज के पुरुष भी बेहद तनावग्रस्त होंगे कि नहीं?

वास्तव में मानव समाज पुरुष और नारी के इतने नजदीकी और बहुपक्षीय संबंधों पर आधारित हैं कि उनमें प्रेम, समता और न्याय के आपसी संबंधों से ही समाज तरक्की कर सकता है। अनेक पुरुषों ने यह बहुत बड़ा काम पाल रखा है कि वे अपनी पत्नी को जितना अपने दबाव व नियंत्रण में रख

सकेंगे उतना ही सुख व आराम उन्हें मिलेगा। वे यह भूल जाते हैं कि जबरदस्ती पर आधारित किसी संबंध से वह सुख मिल ही नहीं सकता है जो गहरे प्रेम, दिल से महसूस किए गए सम्मान व हर सुख-दुख की हिस्सेदारी से मिल सकता है। आदेश व रोबदाब से सुख प्राप्त करने वाले पुरुष उस कोमल प्रेम और गहरे सुख से तो वंचित ही रह जाते हैं जो गहरी संवेदनाओं के उमड़ने से मिलते हैं। अपनी जीवन-संगिनी को हैरान व परेशान कर स्वयं सुख व आराम हथियाने वाले पुरुष यह भूल जाते हैं कि कल उनकी बहन या बेटी को भी यह अन्याय सहना पड़े तो उन्हें कितना दुख होगा।

अतः साफ दिल से सोचने पर पुरुष इस बात को अवश्य मानेंगे कि महिलाओं से हो रहे अन्याय को हटाना व केवल महिलाओं की भलाई और सुख के लिए जरूरी है अपितु उनकी अपनी भलाई और सुख के लिए जरूरी है।

कुछ पुरुषों से जब यह बात कही जाती है तो वे तुरंत आसपास की कुछ महिलाओं के भले-बुरे उदाहरण देने लगते हैं। भले-बुरे उदाहरण तो स्त्री-पुरुष दोनों में मिल सकते हैं पर क्या इस बात से कोई इनकार कर सकता है कि महिलाओं से बहुत अन्याय होता रहा है और हो रहा है? इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्टों से निकाले गए ये नवीनतम आंकड़े और जानकारियाँ विचार करने योग्य हैं–

□ जब भी लड़कियों को पढ़ने के समान अवसर मिले हैं वे लगन और मेहनत में पीछे नहीं रही हैं, इसके बावजूद उन्हें शिक्षा से इतना वंचित रखा गया है कि आज विश्व के अनपढ़ लोगों में महिलाओं की संख्या पुरुषों से दुगुनी है।

□ महिलाओं के स्वास्थ्य की इतनी उपेक्षा होती है कि विज्ञान के इस युग में प्रत्येक वर्ष अभी तक पाँच लाख महिलाओं की मौत बच्चों को जन्म देने की प्रक्रिया में होती है। वाह री दुनिया! जिसने जन्म दिया उसी की कद्र

नहीं की, उसी को नहीं बचाया। स्वास्थ्य और पोषण में असमानता के कारण कई बालिकाओं का जीवन काल कम हो जाता है। भ्रूण हत्या के कारण या महिलाओं के जन्म को न चाहने के कारण हम कितनी बालिकाओं को खो देते हैं। विश्व जनसंख्या में इन कारणों से कई करोड़ महिलाओं की कमी है।

□ अनेक जगहों पर समान कार्य के लिये महिलाओं को कम मजूदरी मिलती है। संपत्ति और रोजगार के मामले में कई स्तरों पर उनसे अन्याय होता है। विश्व की संसदों में मात्र 10 प्रतिशत स्थान महिलाओं के पास है व मंत्रिमंडलों में मात्र 6 प्रतिशत स्थान महिलाओं को प्राप्त हुए हैं।

□ चार विकसित देशों में हुए अध्ययनों से निष्कर्ष निकला कि औसतन छः में से एक महिला बलात्कार का शिकार होती है। (यह चारों देश युद्ध, दंगों आदि से मुक्त हैं, यहाँ सामान्य जीवन चल रहा है, तो भी यह स्थिति है।)

□ चार विकासशील देशों में हुए अध्ययनों से पता चला कि दो तिहाई विवाहित महिलाएँ घरेलू हिंसा सह चुकी हैं। यहाँ तक कि जर्मनी जैसे विकसित

देश में भी प्रति वर्ष चालीस लाख महिलायें घरेलू हिंसा का शिकार होती हैं।

छः विकसित व विकासशील मिले-जुले देशों के अध्ययनों से पता चला है कि एक तिहाई महिलाओं को अपने बचपन या किशोर अवस्था में किसी न किसी तरह का यौन उत्पीड़न सहना पड़ा। प्रति वर्ष लगभग दस लाख बच्चों को (जिनमें अधिकतर एशिया की बालिकाएँ हैं) वेश्यावृत्ति में धकेला जाता है।

इतने व्यापक स्तर पर हो रहे अन्याय व उत्पीड़न को देखते हुए अनायास ही साहिर लुधियानवी की ये पंक्तियाँ याद आ जाती हैं– *''औरत ने जन्म दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे बाजार दिया, जब जी चाहा मसला-कुचला, जब जी चाहा दुत्कार दिया।''*

एक जरूरी सवाल यह भी हुआ कि जब इतने समय से महिलाओं को शिक्षा व अन्य तरह की प्रगति के अवसरों से वंचित रखा गया तो इससे मानव-समाज को कितनी प्रतिभाओं का लाभ नहीं मिल सका व कितनी क्षमता का उचित उपयोग नहीं हो सका। यदि इस प्रतिभा और क्षमता का उचित उपयोग होता तो मानव समाज कितनी प्रगति और कर सकता था। जब हम मानव इतिहास के प्रख्यात और प्रेरणादायक व्यक्तित्वों की बात करते हैं तो महापुरुषों के ही इतने अधिक नाम क्यों आते हैं, महानारियों के नाम इतने कम क्यों आते हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि महिलाओं को दबाकर रखा गया, उन्हें समान अवसर नहीं दिए गए जिसके कारण बहुत-सी प्रगति से, बहुत से प्रेरणादायक व्यक्तित्वों से मानव-समाज वंचित रह गया।

अतः इस बारे में तो कोई सवाल ही नहीं है कि पूरे समाज की भलाई और प्रगति के लिए महिलाओं को न्याय और समता मिलना बहुत जरूरी है। सवाल तो केवल यह है कि इस प्रयास में, इस आंदोलन में किन बातों पर जोर दिया जाए और किन बातों के प्रति सावधान रहा जाए।

हमारे समाज में अनेक तरह की विषमता और अन्याय हैं जिसका सबसे

महत्त्वपूर्ण पक्ष है गरीब मेहनतकश लोगों का शोषण और अमीर-गरीब लोगों में बहुत अधिक विषमता। यह विषमता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है, जहाँ चंद अमीर देश अधिकतर गरीब देशों का शोषण कर रहे हैं। इस मुख्य शोषण और विषमता के विरुद्ध प्रयास समाज की सबसे बड़ी जरूरत है पर साथ ही अन्य प्रयास भी चाहिए जैसे कि महिलाओं के अधिकार प्राप्त करने के प्रयास। पर कुछ लोग ऐसी कोशिश कर रहे हैं कि गरीबी और शोषण के विरुद्ध संघर्ष पर ध्यान ही न दिया जाए और इस मुख्य सवाल से ध्यान हटाने के संकीर्ण दृष्टिकोण से ही महिलाओं के हक के सवाल को उछाला जाए। ऐसे लोग गरीब महिलाओं का कोई हित नहीं कर पाएँगे।

मान लीजिए कि एक मजदूर बेरोजगारी और शोषण के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। इस संघर्ष पर उसकी आजीविका और उसके परिवार का निर्वाह निर्भर है, बच्चों का भोजन और स्कूल की किताबें निर्भर हैं। जरूरी है कि उसकी पत्नी या उसके बच्चों की माँ इस संघर्ष की सफलता चाहती है क्योंकि उसके परिवार का भला इस संघर्ष के साथ जुड़ा है। इस स्थिति में
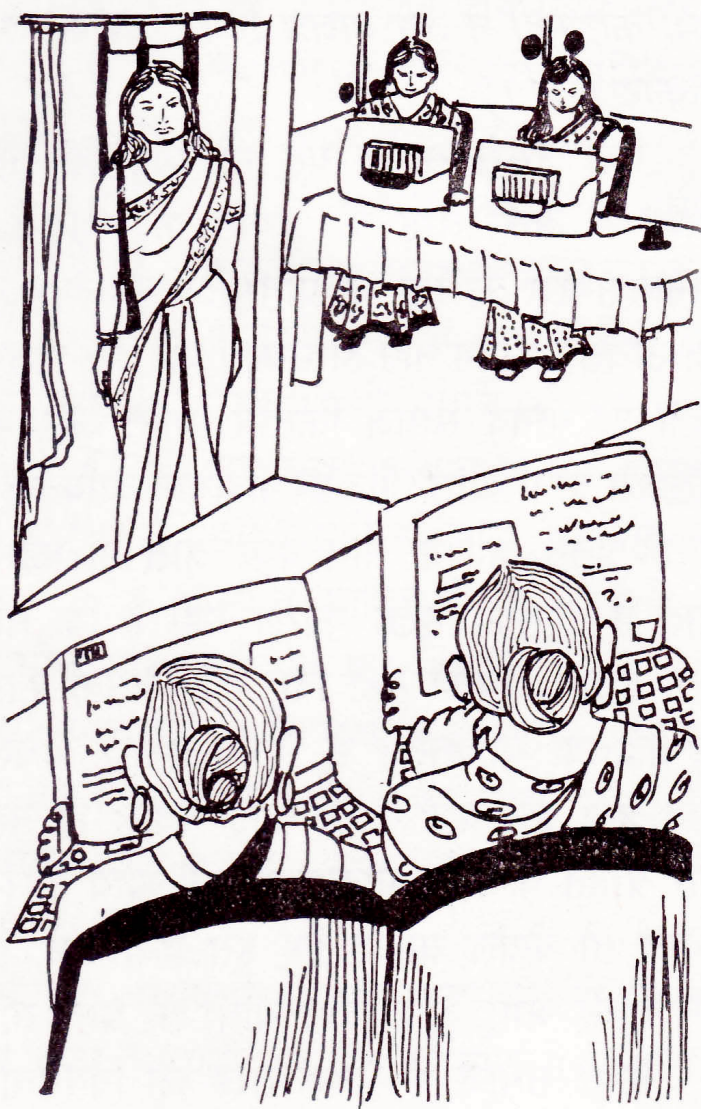
यदि कोई इस महिला से यह कहे कि इस बुनियादी संघर्ष की बात मत करो, केवल यह सोचो कि कहीं तुम्हारा पति कभी-कभी डाँटता-मारता तो नहीं है। इसके जवाब यह मजदूर परिवार की महिला यही देगी कि अपने पति से तो मैं फिर निबट लूँगी पहले यह बताओ कि पूरे परिवार के निर्वाह के लिए जरूरी संघर्ष की बात भूलने को कहकर तुम मेरा, मेरे पति और मेरे बच्चों सबका नुकसान क्यों करना चाहते हो?

वास्तव में आजीविका के संघर्ष में लगे लोगों की बुनियादी समस्याओं से अलग कर, उन समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए जब महिलाओं के हक जैसे सवाल रखे जाते हैं तो इनसे न तो गरीब महिलाएँ जुड़ सकती हैं और न उनका भला हो सकता है। दूसरी ओर जब महिलाओं के हक की बात को मुख्य संघर्ष और आंदोलन के साथ जोड़ दिया जाता है तो महिलाओं के हक के सवाल को व्यापक समर्थन भी मिलता है तथा आंदोलन को पूर्णता भी मिलती है।

कुछ लोग यह कहते हैं कि शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ने पर जब महिलाएँ घर से अधिक बाहर जाने लगेंगी तो इससे परिवार पर और विशेषकर बच्चों के पालन-पोषण पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। जहाँ तक बच्चों को अपना दूध पिलाने का सवाल है तो यह बच्चे के स्वास्थ्य के लिए हर माँ को पिलाना जरूरी है तथा इसकी व्यवस्था तो होनी ही चाहिए, पर इसके अतिरिक्त अन्य जितने कार्य हैं वह माता-पिता को मिलकर करने चाहिए। यदि बच्चों के पालन-पोषण और घरेलू कार्यो को मिल कर किया जाए तो महिलाएँ आगे आयेंगी।

वैसे इतना जरूर सच है कि कुछ पश्चिमी देशों में जहाँ महिलाओं को समानता देने की बात काफी हुई है वहाँ परिवारों के टूटने में भी वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए नार्वे को प्रायः महिलाओं को समुचित अधिकार देने वाला देश कहा जाता है पर वहाँ लगभग आधे विवाहों का अंत तलाक में हो रहा

है और लगभग एक तिहाई बच्चों का जन्म विवाह से बाहर हो रहा है।

अतः महिलाओं के अधिकारों को तो बढ़ाना बहुत जरूरी है पर कुछ सावधानियों की भी जरूरत है। हम चाहते हैं कि महिलाओं को सब अच्छी बातों के समान अवसर मिलें पर हम यह बिल्कुल नहीं चाहते हैं कि बुरी आदतों के भी समान अवसर मिलें। हमारे समाज के पुरुषों को कई बुरी लतें लगी हुई हैं जैसे कि धूम्रपान, शराब और कुछ हद तक व्यभिचार भी। इन बुराइयों से हमारे समाज की महिलाएँ अभी तक काफी दूर हैं। क्या महिलाओं की समता का यह दूषित अर्थ लगाया जाए कि इन बुराइयों में भी महिलाएँ पुरुषों की बराबरी करें। कतई नहीं। उन्हें इन बुराइयों से स्वयं दूर रहना है और इनसे पुरुषों को भी दूर हटाने का प्रयास करना है क्योंकि इनका बुरा असर तो महिलाओं और बच्चों को ही सहना पड़ता है।

महिला आंदोलन बहुत जरूरी है पर किन बातों से सावधान रहना है यह जानना-पहचानना भी जरूरी है।

वृद्ध महिलाओं की आवाज कौन उठायेगा?

बालिकाओं की उपेक्षा, बहुओं पर होने वाला अत्याचार, रोजगार के स्थान पर होने वाला शोषण ये सब बहुत महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं और इन पर जो ध्यान इन दिनों दिया गया है वह पूरी तरह उचित और सार्थक है। लेकिन न जाने क्यों इन सब समस्याओं को उठाते हुए हम महिलाओं के एक बहुत महत्त्वपूर्ण वर्ग को भूल जाते हैं और वह है वृद्ध महिलाएँ। जबकि उपेक्षा और दुख दर्द की नजर से वृद्ध महिलाओं का दर्द बहुत गहरा है।

वृद्ध महिलाएँ आखिर कौन हैं? वही तो जिन्होंने पहले बालिका के रूप में और फिर जवान या मध्यम आयु की महिला के रूप में जितना दुख-दर्द उनके हिस्से आया, उसे पहले ही झेल लिया है। जब हम इन समस्याओं की

गंभीरता को स्वीकार करते हैं, तो इन वृद्ध महिलाओं की उपेक्षा कैसे कर सके हैं जो अपने पहले के वर्षों में इन सबको सहन कर चुकी हैं, काफी हद तक इनसे टूट चुकी हैं और अब वृद्धावस्था में अनेक अन्य समस्याओं का भी सामना कर रही हैं?

इस सीधी-साफ सच्चाई के बावजूद यदि वृद्ध महिलाओं की समस्याओं की आज इतनी उपेक्षा हो रही है तो शायद इसका एक मुख्य कारण है दहेज समस्या और दहेज अत्याचार के बढ़ने के साथ वृद्ध महिलाओं का जो रूप सबसे अधिक प्रचारित हुआ है, वह एक अत्याचारी सास का रूप है। एक सास कोई अत्याचार करती है तो वह समाचार तो अखबारों में छप जाता है, पर सैकड़ों वृद्ध महिलाएँ अपने गिरते स्वास्थ्य को नजरअंदाज करते हुए भी पूरे परिवार की सेवा में लगी रहती हैं उसकी कोई खबर नहीं छपती है। जहाँ किसी के विरुद्ध स्पष्ट प्रमाण हो, तो उसे अवश्य सजा दीजिए पर वृद्ध महिलाओं की एक आम छवि अत्याचारी सास की मत बनने दीजिए। वृद्ध महिलाएँ वात्सल्य से ओत-प्रोत माँ भी हैं, दादी और नानी भी हैं—यह मत भूलिए।

वैसे तो वृद्धावस्था में महिला-पुरुष दोनों को ही अनेक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है, पर चूंकि बचपन से ही महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है, अंतः वृद्धावस्था में उनकी स्वास्थ्य समस्याएँ अधिक होने की संभावना रहती है। जिंदगी भर की थकान के बाद अब उन्हें कुछ आराम की जरूरत महसूस होने लगती है। केवल रसोई के काम को ही देखें तो एक अनुमान के अनुसार 55 से 60 वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते एक भारतीय महिला लगभग पाँच लाख रोटियाँ बना चुकी होती हैं। अंतः गिरते स्वास्थ्य और थकान के कारण रोजाना के काम से कुछ राहत की जरूरत महसूस होना स्वाभाविक ही है। पर आज कुछ आर्थिक दबाव के कारण और कुछ जीवन-शैली में बदलाव के कारण नई पीढ़ी के पास घरेलू काम के लिए समय

कम है। परिणाम यह होता है कि शरीर साथ नहीं देता है, उस समय भी वृद्ध महिलाओं को बहुत-सा काम करना पड़ता है। पोते-पोतियों, नाती-नातिनों से स्वाभाविक प्यार के कारण उनकी देख-रेख के लिए प्रायः इतनी मेहनत कर देती हैं जो उनकी क्षमता से बाहर होती है।

यदि किसी वृद्ध महिला के पति बहुत अस्वस्थ हैं और चल-फिर नहीं सकते हैं तो प्रायः उनकी देख-रेख की जिम्मेदारी भी उन्हें ही उठानी पड़ती है। इस स्थिति में उन्हें यह भी समझ नहीं आता है कि अपना दुख-दर्द कहें भी तो आखिर किससे? सब अपने में व्यस्त होते हैं, बूढ़ी माँ की बात आखिर कौन सुने? उससे तो बस यह उम्मीद की जाती है कि अपनी जिम्मेदारियों को यंत्रवत ढंग से निभाती रहे।

जो वृद्ध महिलाएँ विधवा हैं, वे तो कई बार पूरी तरह अकेली पड़ जाती हैं। भाई होते हैं भी तो अपनी-अपनी गृहस्थी में, अपनी-अपनी समस्याओं से त्रस्त। ऐसी स्थिति में यदि वृद्ध महिला को बहू-बेटे से तिरस्कार या अपमान मिले तो वह दूसरे बहू-बेटे के पास जाती है पर वहाँ भी वैसा ही व्यवहार मिलता है तो उसे यह सब चुपचाप सहने को मजबूर होना पड़ता है। जिंदगी भर कड़ी मेहनत करने के बाद उन्हें लगता है जैसे उनका अभी तक कोई ठौर-ठिकाना ही नहीं बन पाया है। घर की इज्जत बनाने के ख्याल से कई बार वह बड़े-बड़े अपमान सहने पर भी बात को अपने तक ही रख लेती है, पर मन में यह टीस बार-बार उठती रहती है कि क्या यही देखने के लिए मैंने जिंदगी भर इतनी मेहनत की। शारीरिक अस्वस्थता के साथ-साथ यह निराशा उनके दिल को व्याकुल करती रहती है और अंतिम समय तक उनमें प्यार की प्यास बनी रहती है।

यह सब समस्याएँ गरीब परिवारों में और भी अधिक कष्टदायक रूप में हैं क्योंकि वहाँ बुनियादी जरूरतों तक का अभाव है, अतः अन्य समस्याओं

को झेलने के साथ-साथ वृद्धावस्था में भी भोजन, दवा, वस्त्र, उचित आवास का अभाव कष्ट देता रहता है।

दुनिया में सबसे समर्थ और निर्णायक लोग युवा या मध्यम आयु के हैं। बच्चे फिर भी अपनी मासूमियत और भोलेपन से संवेदना जगा लेते हैं, ध्यान आकर्षित कर लेते हैं पर वृद्ध लोगों की बातें हमें न तो प्यारी लगती हैं न उनमें कोई आकर्षण लगता है। उनमें समझदारी तो बहुत है, अनुभव भी खूब है, पर इन सबकी ओर से जैसे हमने अपनी आँखें मूँदी हुई हैं। वृद्ध पुरुषों की फिर भी पेंशन आदि आती रहती है, अतः उनका परिवार में कुछ महत्त्व बना रहता है। पर वृद्ध महिलाओं की उपेक्षा और अवहेलना आसानी से हो सकती है और हो रही है।

महिलाओं की समस्याओं पर ध्यान देने की एक अच्छी शुरुआत हो चुकी है, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके लिए काफी योजनाएँ व कार्यक्रम भी बन रहे हैं, पर इस पूरे आयोजन में वृद्ध महिलाएँ उपेक्षित हो रही हैं। उनकी समस्याओं को उठाना अभी किसी के लिए 'फैशनेबल' नहीं बना है। वृद्ध महिलाएँ माँ हैं, जननी हैं। भारतीय संस्कृति में माताजी शब्द को बहुत महत्त्व दिया गया है, पर आज माताजी ही सबसे उपेक्षित हो रही हैं। माँ की अवहेलना कर हम आखिर कहाँ जा रहे हैं, कहाँ पहुँच सकेंगे। आखिर वे कौन-सी इतनी बड़ी व्यस्तताएँ हैं जिनके कारण हम परिवार के उसी सदस्य की ओर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं जिसने पूरे परिवार को बनाया है।

हमने अपने तेजी से बदलते समाज के इस उपेक्षित पक्ष की ओर ध्यान नहीं दिया तो यह बहुत भारी भूल होगी जिस समाज ने माँ की जगह को नहीं पहचाना है, वह भूला-भटका हुआ नहीं है तो और क्या है? ❑❑❑